बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय

बाँदा – २१०००१ (उ0प्र0)

Banda University of Agriculture & Technology, Banda- 210001 (U.P.)

मौसम आधारित कृषि सलाह

(Agro-Weather Advisory Bulletin No.: 120/2024) Year: 6th

जिला: बाँदा	**जारी करने की तिथि:** 02/1/2025

क्रम सं	विभाग	सलाह
1-	**शाक-भाजी**	➢ धुंध कोहरे एवं पाले के कारण आलू की फसल में झुलसा रोग आने की संभावना है अतः मिट्टी नम रखें तथा सुरक्षा की दृष्टि से ०ण्२ः मैंकोजेब नामक फफूंदनाशी का छिड़काव करें। ➢ खड़ी फसलों में मृदा जल एवं खरपतवार प्रबंधन करें। ➢ पिछेती उत्पाद हेतु पत्ता गोभीए फूल गोभीए टमाटरए बैगन शिमला मिर्च की रोपाई करें। ➢ प्याज की तैयार पौध की भी रोपाई की जा सकती है। ➢ कद्दू वर्गीय सब्जियों की अगेती फसल हेतु लो टनल अथवा पॉलीहाउस के अंदर पॉलीबैग में पौध तैयार कर लें।
2-	**शस्य-प्रबंधन एवं मृदा-प्रबंधन**	**शस्य प्रबंधन.** ➢ गेंहू की फसल में 120.–60–40 किग्रा0 प्रति हे0 की दर से नत्रजन फास्फोरस तथा पोटाश का प्रयोग करना चाहिये। फास्फोरस तथा पोटाश की सम्पूर्ण मात्रा तथा नत्रजन की आधी मात्रा बुवाई के समय प्रयोग करना चाहिये। ➢ अगर एक सिंचाई उपलब्ध हो ता`षेष आधी मात्रा बुवाई के 20–25 दिन बाद क्रन्तिक जड़ निकलने की अवस्था पर करना चाहिये। ➢ **अगर दो सिंचाई उपलब्ध हो** गेंहू की फसल में 120.–60–40 किग्रा0 प्रति हे0 की दर से नत्रजन फास्फोरस तथा पोटाश का प्रयोग करना चाहिये। ➢ फास्फोरस तथा पोटाश की सम्पूर्ण मात्रा बुवाई के समय प्रयोग करना चाहिये। ➢ नत्रजन की शेष मात्रा को दो भागों में देना चाहिये एक भाग बुवाई के 20–25 दिन बाद क्रन्तिक जड़ निकलने की अवस्था पर करना चाहिये। तथा दूसरा भाग बुवाई के चालीस से पैतालिस दिन बाद कल्ले फूटने के अवस्था में देना चाहिये। • गेहुंसा के रोकथाम के लिए गेहूँ की खड़ी फसल में खरपतवार नियंत्रण हेतु बुआई के ३० दिन बाद सल्फोसल्फ्युरोंन + मेत्सल्फ्युरोंन (टोटल) १६ ग्राम प्रति एकड़ की दर से १५० लीटर पानी में घोल बनाकर छिड्काव करें । • खरपतवारों के प्रभावी नियंत्रण के लिए खरपतवारनाशी का छिड़काव हमेशा फ्लैटफैन नाजेल (कट नाजेल) से करना चाहिए । • फसलों को प्रारंभिक अवस्था में खरपतवारों की प्रतिस्पर्धा से बचने के लिए समय से बोई गई दलहनी, तिलहनी फसलों में निराई गुराई अवस्य प्रारम्भ कर देना चाहिए।

		➢ दलहनी फसलों में घास कुल के खरपतवार के नियंत्रण हेतु क्युजालोफोप इथाइल 5% (टर्गासुपर) के 1000 ग्राम मात्रा का 500 लीटर पानी में घोल बनाकर 20-22 दिन की अवस्था पर छिड्काव करें ।
3-	पशुपालन प्रबंधन	➢ सर्दी के मौसम में पशुओं के पोषण की व्यवस्था ठीक रखनी पड़ती हे। पशुओं को सही भोजन नहीं मिलने से उनमे बीमारियों से लड़ने की क्षमता क्षीण हो जाती है, जिससे पशु जल्दी व बार बार बीमार हो जाते हैं। ➢ सर्दियों में पशुओं को बीमारी से बचाने के लिए कम से कम 25 प्रतिशत हरा चारा व 75 प्रतिशत बढ़िया सूखा चारा खिलाना चाहिए। ➢ पशु को सप्ताह में दो बार गुड़ अवश्य खिलाए। ➢ बिनौला, दाना, खली, खनिज मिश्रण व सैंधा नमक भी पशु राशन में अवश्य सम्मिलित करें जिससे पशुओं की सर्दियों में बीमारी से लड़ने की क्षमता बनी रहे साथ ही उनकी उत्पादकता भी प्रभावित न हो।
4–	**कीट-प्रबंधन**	➢ राई/सरसों में प्रारम्भिक अवस्था मे माँहू से प्रभावित फूलों, फलियों एवं शाखाओं को तोड़कर माँहू सहित नष्ट कर देना चाहिये। जैविक नियंत्रण एजाडिरैक्टिन (नीम ऑयल) 0.15 प्रतिशत ई0सी0 2.50 लीटर प्रति हे0 की दर से 600–700 ली. पानी में घोलकर छिड़काव करें। कीट के रासायनिक नियंत्रण हेतु फ्लोनीकॉमिड 50 डब्ल्यू जी 80 ग्राम को 200 लीटर पानी में घोलकर प्रति एकड़ में घोलकर छिड़काव करना चाहिये। ➢ चना/मटर/ मसूर में कटुआ कीट (कट वर्म) के जैविक नियंत्रण हेतु मेटाराइजियम एनिसोप्ली 2.5 किग्रा0 प्रति हे0 की दर से 400–500 लीटर पानी मे घोलकर सायंकाल छिड़काव करना चाहिये। फली बेधक के नियंत्रण हेतु फसल की नियमित निगरानी करते रहें 5 फेरोमोन ट्रैप प्रति हे0 की दर से खेत मे लगायें। आवश्यकतानुसार नीम गिरी 4 प्रतिशत अथवा एच0एन0पी0वी0 250 एल0इ0 250–300 मिली0 300–400 लीटर पानी मे घोलकर प्रति हे0 की दर से सायंकाल छिड़काव करके कीट का जैविक नियंत्रण करें। ➢ मटर में स्टेम फ्लाई (तने की मक्खी) के नियंत्रण हेतु क्लोरेन्ट्रानिलीप्रोल कीटनाशी की 60 मिलीलीटर मात्रा को 200 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करें । ➢ सब्जियों में कीटों के नियंत्रण हेतु नीम गिरी 4 प्रतिशत (40 ग्रा0 नीम गिरी का चूर्ण 1 ली0 पानी में) का घोल बनाकर 10 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करना चाहिए। ➢ बैगन की फसल में कलंगी एवं फल बेधक कीट के नियंत्रण हेतु 10 मीटर के अन्तराल पर प्रति हेक्टेयर में 100 फेरोमोन ट्रेप लगाकर वयस्क नर कीट पकड़ कर नष्ट कर देना चाहिए व क्लोरेन्ट्रानिलीप्रोल कीटनाशी की 80 मिलीलीटर

		मात्रा को 200 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति एकड़ की दर से 10 दिन के अन्तराल पर आवश्यकतानुसार छिड़काव करना चाहिए। ➢ टमाटर में फल बेधक सूड़ी के नियंत्रण हेतु एजाडिरैक्टिन 0.15 प्रतिशत की 2.5 लीटर मात्रा को 500–600 लीटर पानी में घोलकर प्रति हे0 की दर से आवश्यकतानुसार 8–10 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करें। ➢ फूलगोभी, पत्तागोभी में डायमंड बैक मोथ की निगरानी हेतू फेरोमोन प्रपंच 3–4 / एकड़ लगाए व बैसिलस थूरिनजिएन्सिस (बी0टी0) 1.0 किग्रा0 प्रति हे0 की दर से 400–500 ली0 पानी में घोलकर आवश्यकतानुसार 10–15 दिन के अन्तराल पर सायंकाल छिडकाव करना चाहिए। रस चूसने वाले कीटों के नियंत्रण हेतु इमिडाक्लोप्रिड 17.8 प्रतिशत एस0एल0 3 मिली0 को 10 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। ➢ आम में मिली बग कीट के नियंत्रण हेतु आम के तने के चारों ओर गहरी गुड़ाई करके मिथाइल पैराथियान 2 प्रतिशत चूर्ण की 200 ग्राम मात्रा प्रति पेड़ की दर से मिट्टी में मिला दें तथा मुख्य तने पर 400 गेज की पालीथीन की 25 से0मी0 चौड़ी पट्टी बांधे और पट्टी के ऊपरी तथा निचली सिरे पर ग्रीस लगाकर सील कर दें। यदि कीट पेड़ पर चढ़ गये हों तो फ्लोनीकॉमिड 50 डब्ल्यू जी 4 ग्राम को 10 लीटर पानी में घोलकर प्रति पेड़ पानी में घोलकर छिड़काव 15 दिन के अन्तर पर 2–3 बार करें।
5–	**पादप रोग प्रबंधन**	➢ इस मौसम सरसों आलू व टमाटर की फसल में अल्टरनेरिया झुलसा रोग के संक्रमण होने की सम्भावना है किसान भाई खेत की निगरानी करते रहे रोग के लक्षण दिखाई देने पर मैन्कोजेब अथवा क्लोरोथैलोनिल (कवच), अथवा एण्ट्राकोल (प्रापीनेव) 2 ग्रा0 प्रति लीटर पानी का घोल बनाकर 10 दिन के अन्तराल पर छिडकाव करें।
6.	**बागवानी. प्रबंधन**	**आम में मुख्य कृषि कार्य** ➢ आम के पेडों में मीलीबग के बच्चों को चढने से रोकने के लिए पोलिथिन की २ फुट चौडी पट्टी कसकर लपेट दें तांकि बच्चे फिसलकर नीचे गिर जाये । फिर इन्हें इकट्ठा करके जला दें। ➢ पाला पडने की सम्भावना हो तो आम के बाग में धुंआ करें। ➢ आवश्यकतानुसार पौधों में नियमित सिंचाई करें. मधुआ कीट एवं पाउडरी मिल्ड्यू के नियंत्रण के लिए मंजर निकलने के समय बैविस्टिन (0.2 प्रतिशत) तथा इमिडाक्लोप्रिड (0.05 प्रतिशत) का पहला छिड़काव करें। **पपीता में मुख्य कृषि कार्य** ➢ पौधों को पाले से बचाने के लिए धुआ करें और बाग में पर्याप्त नमी बनाएं। कच्चे फलों को टाट अथवा बोरे से ढंक दें। ➢ वृक्षारोपण के छः महीने के बाद प्रति पौधा उर्वरक देना चाहिए । नाईट्रोजन – 150 –200 ग्राम, फॉस्फोरस – 200–250 ग्राम, पोटाशियम – 100–150 ग्राम. तीनों उर्वरक 2–3 खुराक में वृक्ष लगाने से पहले फूल आने के समय तथा फल लगने के समय दे देना चाहिए। **केला में मुख्य कृषि कार्य**

		➢ आवांछित पुत्तियों (सकर्स) को निकाल दें। यदि फल पकाने लायक हों तो घार को काटकर पकाने के लिए रखे दें। ➢ इस माह के पहले और तीसरे सप्ताह में सिंचाई करें। ➢ केला बीटल के प्रबंधन हेतु बाग के सफाई करें **बेर में मुख्य कृषि कार्य** ➢ बेर में सफेद चुर्णी रोग दिखाई देने पर घुलनशील गंधक ४०० ग्राम को २०० लीटर पानी में घोलकर पेडों पर छिडकें । ➢ फलमक्खी नियंत्रण के लिए 1०5 मि.ली प्रोफेनोफास प्रति लीटर पानी में मिलाकर 15 दिनों के अन्तर पर छिडके। ➢ फल झडन की रोकथाम हतु एन0 ए0 ए0 बागवानी ग्रेड का 20 पी0पी0म0 की दर से फल मटर के आकार की अवस्था पर 15 दिन के अंतराल पर दो छिडक़ाव करें। ➢ अपरिपक्व फलों के गिरने को रोकने व उत्तम गुणवत्ता युक्त अधिक उपज के लि, नियमित 10–12 दिन के अंतराल पर सिंचाई करें। **नीबू में मुख्य कृषि कार्य** ➢ पके फलों को तोड़कर बिक्रय हेतु बाजार भेजें। ➢ छोटे पौधों को 10 किलोग्राम गोबर की खाद और 25 ग्राम फॉस्फोरस प्रति वर्ष के हिसाब से बढ़ाकर दें। ➢ फलदार पेड़ों में 50 किलोग्राम गोबर की सड़ी हुई खाद और 125 ग्राम फॉस्फोरस प्रति पेड़ के हिसाब से पेड़ के फैलाव में 20 सेमी की गहराई में डालें। ➢ नीबू में कैंकंर रोग की रोकथाम के लिए २० मि0ग्रा0 स्ट्रप्टोसाइकिलिन को २५ ग्राम कॉपर सल्फेट के साथ २०० लीटर पानी में मिलाकर छिडकाव करें । **आंवला में मुख्य कृषि कार्य** ➢ फल सड़न रोग की रोकथाम हेतु 500 ग्राम कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 200 लीटर पानी में घोलकर एक छिड़काव करें। ➢ फलों को तोड़कर बिक्रय हेतु बाजार भेजें। ➢ तुड़ाई उपरांत फलों को डाइफोलेटान (0.15 प्रतिशत), डाइथेन एम 45 या बैवेस्टीन (0.1 प्रतिशत) से उपचारित करके भण्डारित करने से रोग की रोकथाम की जा सकती है. ➢ बाग को साफ रखें। **अमरुद में मुख्य कृषि कार्य** ➢ फलों को तोतों व चिड़ियों से सुरक्षा करें । ➢ पके फलों को तोड़कर बाजार भेजें। ➢ बाग की साफ सफाई करें।

		➢ फलमक्खी नियंत्रण के लिए 1़5 मि.ली प्रोफेनोफास प्रति लीटर पानी में मिलाकर फल परिपक्कता के पूर्व 10 दिनों के अंतर पर 2–3 छिड़काव करें। ➢ प्रभावित फलों को तोड़कर नष्ट कर देना चाहिए तथा बगीचे में फल मक्खी के वयस्क नर को फंसाने के लिए फेरोमोन ट्रेप लगाने चाहिए। **कटहल में मुख्य कृषि कार्य** ➢ फलदार पेड़ों में 50 किलोग्राम गोबर की खाद और 600 ग्राम फॉस्फोरस प्रति पेड़ के हिसाब से पेड़ के फैलाव में दें। **स्ट्राबेरी में मुख्य कृषि कार्य** ➢ दिसंबर माह में रोपण का कार्य पूरा कर लें । ➢ खेत तैयारी के समय वर्मीकम्पोस्ट ५ से १० कुंतल , नत्रजन १०० किलोग्राम , फॉस्फोरस ८० किलोग्राम एवं पोटाश ६० किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करें । ➢ यदि संभव हो तो स्ट्राबेरी की खेती संरक्षित संरचना में करें। **अनार में मुख्य कृषि कार्य** ➢ अम्बे बहार का फलत लेने के लिए ५०० ग्राम नत्रजन , २५० ग्राम फॉस्फोरस एवं ५०० ग्राम पोटाश की मात्रा प्रति पौधा प्रति वर्ष प्रयोग करें । ➢ १० से १५ दिन के अंतराल पर सिंचाई करते रहना चाहिए । ➢ फल मक्खी के नियंत्रण के लिए प्रोफेनोफोस १.५ मिली लीटर प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
7.	वानिकी प्रबंधन	➢ कृषि वानिकी प्रणाली के अंतर्गत रोपित इमारती लकड़ी की प्रजातियों जैसी सगवान, यूकेलिप्टस, अंजन, गम्हार, नीम, मालाबार नीम, कैजुअरिना की निचली शाखाओं को तेज आरी से काटें ताकि गाँठ मुक्त गुणवत्ता वाली लकड़ी प्राप्त हो और कृषि फसल पर छाया का प्रभाव कम किया जा सके। यह प्रक्रिया पेड़ों को तेज हवा के नुकसान से भी बचाता है। ➢ कृषि वानिकी के अंतर्गत लगाए गए पेड़ों के थालों की निराई गुड़ाई और सिंचाई करें □ ➢ वानिकी पौधशाला को खरपतवार और रोग मुक्त रखें।

वैज्ञानिक सलाहकार मंडल–

1. डॉ जी. एस. पंवार	6. डॉ मयंक दुबे
2. डॉ दिनेश साह	7. डॉ दिनेश गुप्ता
3. डॉ ए.सी. मिश्रा	8. डॉ पंकज कुमार ओझा
4. डॉ ए.के. श्रीवास्तव	9. डॉ सुभाष चंद्र सिंह
5. डॉ राकेश पाण्डेय	